77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर भाषण

प्रिय एईआरबी सहकर्मियों,

हमारे देश के 77वें गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर, मैं सभी अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवारों को हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूं। इस दिन को मनाते हुए, मुझे संस्कृत श्लोक की याद आती है।

जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गादापी गारियसी" (Janani Janmabhumischa, Swargādapi Garīyasī")
— Mother and motherland are dearer than heaven.

यह गहन श्लोक देशभक्ति और कर्तव्य की भावना को बखूबी दर्शाता है, जो भारत के नागरिक के रूप में हमें एक साथ बांधती है। अपने महान राष्ट्र के 77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर, हम भारत के संविधान में निहित अधिकारों और दायित्वों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हैं, और यह बात सर्वथा याद रखते हैं कि अधिकार दायित्वों के पूर्ण निर्वहन से अविभाज्य नहीं हो सकते।

आज हमारी सर्वोपरि सामूहिक जिम्मेदारी विकसित भारत 2047 के राष्ट्रीय दृष्टिकोण में सार्थक योगदान देना है—जो कि भारत की एक पूर्ण विकसित राष्ट्र बनने की आकांक्षा है। देश कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति कर रहा है और इस लक्ष्य की ओर दृढ़ता से अग्रसर है। एक विकसित राष्ट्र की सामान्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- सशक्त आर्थिक प्रदर्शन के साथ उच्च गुणवत्ता वाला जीवन स्तर,
- सुदृढ़ मूल्य, संस्थाएँ और शासन प्रणाली,
- तकनीकी नेतृत्व एवं नवाचार,
- अत्याधुनिक अवसंरचना एवं
- बेहतर स्वास्थ्य और शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति ऊर्जा आत्मनिर्भरता से अंतर्निहित रूप से जुड़ी हुई है, जिसमें परमाणु ऊर्जा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक सतत, कार्बन-मुक्त स्वच्छ ऊर्जा स्रोत के रूप में, परमाणु ऊर्जा भारत के ऊर्जा मिश्रण का एक अनिवार्य घटक है। चिकित्सा, औद्योगिक, कृषि और अनुसंधान अनुप्रयोगों में आयनीकरण विकिरण के व्यापक और लाभकारी उपयोग से इसका और भी अधिक महत्व बढ़ जाता है, जो सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

इस शुभ अवसर पर, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि एईआरबी हमारी "कर्मभूमि" है। देश भर में फैले विविध कार्यबल के साथ, एईआरबी वास्तव में एक लघु भारत का प्रतिनिधित्व करता है, जो संरक्षा और जनविश्वास के साझा मिशन से एकजुट है।

1983 में अपनी स्थापना के बाद से, एईआरबी एक सशक्त और परिपक्व नियामक निकाय के रूप में विकसित हुआ है। आज हम अपने सभी कर्मचारियों और वर्तमान और पूर्व नेताओं के योगदान को स्वीकार करते हैं, जिनकी लगन और व्यावसायिकता ने एईआरबी को आज के स्वरूप में ढाला है।

परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में हो रहे बदलाव, विशेष रूप से शांति अधिनियम, 2025 के माध्यम से आए प्रतिमान परिवर्तन और निजी भागीदारी के लिए परमाणु ऊर्जा के द्वार खोलने से, प्रभावी, कुशल और दूरदर्शी होने का हमारा संकल्प और भी मजबूत हुआ है। इसके लिए निम्नलिखित की आवश्यकता है:

- नियामक प्रक्रियाओं का सरलीकरण, संरक्षा मानकों को बनाए रखना,
- प्रक्रियाओं और प्रथाओं का मानकीकरण,
- योग्यता निर्माण और मानव संसाधन संवर्धन,
- गतिविधियों की कड़ी निगरानी और लेखापरीक्षा, और
- पारदर्शिता, जिसमें आंकड़े और साक्ष्य स्वयं अपनी बात कहते हैं।

इसी भावना के साथ, आइए हम प्राचीन श्लोक को प्रतीकात्मक रूप से नया रूप दें और इसमें एईआरबी को जोड़ें। आइए हम यहाँ अपने काम को इतना फलदायी बनाएँ कि यह स्वर्ग के समान हो। राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देते हुए, इसे हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी और गौरव समझें।

आइए हम एईआरबी के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सहयोग, आपसी समर्थन और एकता के साथ मिलकर काम करने का संकल्प लें, और विकासशील भारत 2047 के व्यापक उद्देश्य को अपने दैनिक कार्यों और निर्णयों के केंद्र में रखें।
जय हिंद!!